उर्दू के जरिये साइंस की खुशबू पहुंचाना मकसद

SUNDAY, 15 JULY 2012 10:33

देश का राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान एक ऐसा संस्थान है, जो विज्ञान के प्रचार-प्रसार के लिए काम करता है. इस संस्थान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह उर्दू भाषियों के लिए 'साइंस की दुनिया' नामक की पत्रिका का संचालन उर्दू भाषा में करता है. अदब और तहजीब की भाषा उर्दू के सहारे विज्ञान और तकनीक की बात पहुंचाकर देश से अंधकार और आडम्बर को दूर करना इस पत्रिका का मकसद है. मुस्लिम समुदाय के साथ ही उर्दू के जानकार लोगों में बेहद लोकप्रिय इस पत्रिका के संपादक व वैज्ञानिक डा. रविन्द्र कुमार से बातचीत के प्रमुख अंश :

डॉ. रविन्द्र कुमार से संजीव कुमार की बातचीत

रवीन्द्र कुमार

यह मान के चला जाता है कि अगर उर्दू में कुछ छप रहा है तो किसी मुस्लिम की देखरेख में ही होगा, लेकिन आप इसको भ्रम साबित करते हैं. इस उपलब्धि पर आपकी प्रतिक्रिया ?

कोई भी भाषा किसी व्यक्ति विशेष क्षेत्र या धर्म की नहीं होती, जो जिस भाषा को जानता है वो उसी की भाषा बनकर रह जाती है. इस भाषा का किसी धर्म से कोई ताल्लुक नहीं है. यह एक हिन्दुस्तानी भाषा है. यह भाषा सबको आनी चाहिए और इस भाषा को जिंदा रखने की सख्त जरूरत है, क्योंकि यह भाषा हमारे हिन्दुस्तान की अपनी भाषा है.

साइंस की दुनिया उर्दू में

लेकिन उर्दू में संपादित 'साइंस की दुनिया' पत्रिका का संपादक बनने का सफर आपने कैसे तय किया?

मेरी प्रारम्भिक शिक्षा अलीगढ़ के मिंटोसर्किल स्कूल में हुई. इसके बाद अलीगढ़ विश्वविद्यालय से स्नातक और आगरा से पीएचडी किया. मैंने बीएससी तक उर्दू की पढ़ाई की. मेरे मित्र अब्दुल रहीम किदवई ने उर्दू सिखाने में मेरी बहुत मदद की और 1984 में राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान से जुड़ा रहा. इस संस्थान की तीन पत्रिकाएं निकलती है. साइंस रिपोर्टर, विज्ञान प्रगति और साइंस की दुनिया. इस पत्रिका के पहले संपादक गुलजार देहलवी थे. उनके बाद खलील साहब संपादक बने. उनके सेवानिवृत्ति के बाद 2004 में मुझे संपादक बना दिया गया. साइंस की दुनिया पत्रिका के लिए साइंस और उर्दू का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है. मुझे यह दोनों ही आती थी. आज यह संस्थान कौमी कौंसिल की 44 हजार किताबों का आर्डर पूरा कर रहा है. विदेशों के पुस्तकालय में भी यहां से पुस्तकें जाती है.

आप साइंस की दुनिया के बारे में बतायें?

देश में हिन्दी-अंग्रेजी का चलन बहुत है. उर्दू का चलन बहुत कम हो गया है. उर्दू जानने वालों का सांइस के बारे में बहुत कम ज्ञान है. उनका ध्यान केवल अदब की तरफ रहता है. उर्द में साइंस की किताबें शून्य के बराबर है. इसलिए सीएसआईआर ने सोचा कि उर्द जानने वालों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करने के लिए निकाली जाये. इस पत्रिका का उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन साहब ने 20 जून, 1975 को दिल्ली में किया. तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने पत्रिका के प्रकाशन को आगे बढ़वाया. अब यह पत्रिका उर्दू के साथ साइंसी मिजाज पैदा कर रही है. इस पत्रिका में लगातार बच्चे, महिला और समाज के लिए वैज्ञानिक बढ़ावा देने वाली जानकारियां व बहुत सारी वैज्ञानिक रौचक जानकारी होती है जो उर्दू के जानकार सामान्य रूप से नहीं जान पाते.

सांइस की दुनिया की वर्तमान स्थिति तथा भविष्य की क्या तैयारी है ?

साइंस की दुनिया पत्रिका लगाकर आगे बढ़ रही है. जनवरी, 2010 से पत्रिका आनलाइन हो गई है. पत्रिका की फोटो क्वालिटी व रोचक पठनीय सामग्री उर्दू के साथ-साथ विज्ञान को आगे बढ़ाने का मिशन देश और विदेश में चला रही है. पत्रिका की तरक्की और बेहतरी में निस्केयर के निदेशक डा. गगन प्रताप के निर्देशन व संस्थान की पूरी टीम काम करती है. पापुलर सांइस विभाग की श्रीमती दिक्षा वीरट सहित अनेक लोग आज विज्ञान के सहारे उर्दू की खुशबू हर कोने में महकाना चाहते हैं.

(संजीव कुमार पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पत्रकार हैं.)